'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 14 | 04 अक्टूबर, 2018 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

10 दिन | पांच राज्य | 27 शिविर | लगभग 3000 शिविरार्थी

'जारी है प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला'

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा प्रणीत सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली को ग्राम-ग्राम, नगर-नगर तक पहुंचाने के लक्ष्य के साथ श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला निरन्तर चल रही है। इसी क्रम में 15 से 24 सितम्बर की दस दिवसीय अवधि में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, गुजरात और राजस्थान राज्यों में विभिन्न स्थानों पर दो बालिका शिविरों सहित कुल 27 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए, जिनमें तीन हजार के लगभग क्षत्रिय बालकों व बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रांत की सांखलों की ढाणी (खांगटा) में 20 से 23 सितम्बर तक बालकों का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी व शिविर संचालक प्रेमसिंह रणधा ने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि चार दिन चले इस अनुष्ठान में हमने पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण के गुर सीखे हैं। भगवान ने हमे क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है तो निश्चित रूप से स्वर्ण तो हैं ही, परन्तु सोने से कुन्दन बनने के लिए तप को सहन करने की आवश्यकता होती है। हमें भी अनवरत रूप से संघ के सम्पर्क में रहकर अपने आप को तपाना होगा तभी हममें क्षत्रियत्व निखरेगा। शिविर के तीसरे दिन वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव भी शिविर में सम्मिलित हुए तथा अपने सांघिक जीवन के संस्मरण शिविरार्थियों से साझा किया। शिविर में खांगटा, सालवा, रूदिया, मेरासिया, साथिन, पीपाड़ आदि गांवों के तथा हनुवंत छात्रावास के लगभग 130 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर व्यवस्था में खांगटा गांव के श्रवणसिंह, देवीसिंह, नवीनसिंह, दिलीपसिंह आदि का सहयोग रहा।

जालोर संभाग में भीनमाल के निकट दासपां गांव के लोलेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में भी इसी अवधि में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। यह शिविर संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवन्तसिंह पाटोदा के संचालन में संपन्न हुआ। उन्होंने शिविरार्थियों को बताया कि संघ को पूर्ण रूप से समझने के लिए हमें पूज्य तनसिंह जी को समझना होगा और उन्हें समझने के लिए उनके द्वारा रचे गए साहित्य का अध्ययन करना होगा उसको आचरण में ढालना होगा और फिर भी समझ में न आए तो तनसिंह जी की इस पंक्ति को याद रखें - 'समझ में न आए तो यही बात जानो, अभी कई रातें जगानी है बाकी।' **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

राजनीतिक जागृति के वाहक : माट्साब

जयंती विशेष

आजाद भारत के राजस्थान में राजपूत राजनीति को दिशा देने वाले श्रद्धेय माट् साब आयुवानसिंह जी की आगामी 17 अक्टूबर को हम 98वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख आयुवानसिंह जी 20 अक्टूबर 1920 को मारवाड़ एवं शेखावाटी की सीमा पर स्थित गांव हुडील में जन्में। 1938 में चौपासनी से आठवीं पास कर बाड़मेर में ड्रिल मास्टर के रूप में नियुक्त हुए। नौकरी के साथ अध्ययन जारी रखते हुए एम.ए. एवं एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की और 1948 में नौकरी छोड़कर पूर्वकालिक रूप से सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। पूज्य तनसिंह जी के अध्ययन के दौरान ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखे लेखों से आप प्रभावित हुए एवं दोनों में सम्पर्क हुआ। 1944 में बने श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रथम अधिवेशन के आप अध्यक्ष बनाए गए। 22 दिसम्बर 1946 को अस्तित्व में आए संघ के वर्तमान स्वरूप से भी आप परिचित हुए एवं संघ के शिविरों की श्रृंखला के चौथे शिविर प्रा.प्र.शि. बाप तलाई बाड़मेर में आप पहली बार शिविर में पधारे। उसके बाद इतने प्रभावित हुए कि संघमय हो गए। पूज्य तनसिंह जी आपकी प्रतिभा से अतिशय प्रभावित थे इसलिए 1954 में जीणमाता उ.प्र.शि. में आपको संघ प्रमुख बनाया गया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कर्नल रवि राठौड़ को अर्जुन पुरस्कार

नागौर जिले के केराप निवासी ब्रिगेडियर गोविंदसिंह के पुत्र कर्नल रवि राठौड़ को पोलो में बेहतर प्रदर्शन के लिए 25 सितम्बर को दिल्ली में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कर्नल राठौड़ अभी सेना की 61 कैवलरी में सी.ओ. हैं एवं जयपुर में पदस्थापित हैं।

संघ प्रमुख श्री का बैंगलूर प्रवास

अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत माननीय संघ प्रमुख श्री 15 व 16 सितम्बर को बैंगलूर प्रवास पर रहे। 15 सितम्बर को वी.पी.सिंह राबड़ियावास के फार्म हाउस पर वहां काम कर रहे व्यापारी वर्ग एवं सूचना तकनीकी क्षेत्र के समाज बंधुओं के साथ बैठक की। बैठक में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप सभी ने अपनी मातृभूमि से दूर यहां आकर अपने आपको स्थापित किया है ऐसे में यह आवश्यक है कि आपकी यह उपलब्धि आप तक सीमित नहीं रहे बल्कि नए आने वाले लोगों को भी आपकी इस उपलब्धि का लाभ मिले। इसके लिए आप सभी को मिलकर इस प्रकार का कोई प्रयास करना चाहिए जिससे नये लोग आपके अनुभव का लाभ ले सकें। दातारसिंह, मनोहरसिंह आदि सहित उपस्थित समाज बंधुओं ने आपस में चर्चा कर इस प्रकार की व्यवस्था बनाने हेतु विचार-विमर्श किया एवं अपने स्वयं के अनुभव बताए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

हर मानव में सहज मानवीय प्रवृत्तियां होती हैं। इससे भी आगे बात करें तो हर प्राणी में सभी सहज प्रवृत्तियां विद्यमान रहती है। संसार के समस्त प्राणी उन सभी सहज प्रवृत्तियों के वशीभूत हो व्यवहार करते हैं लेकिन जागरूक लोग उन सहज प्रवृत्तियों को समझते हैं और अपनी साधना के बल पर उन पर नियंत्रण स्थापित कर उन्हें अपनी साधना में उपयोगी बना लेते हैं। उनको अपने जीवन लक्ष्य के निमित्त बना लेते हैं, संसार के लिए मार्गदर्शक बना देते हैं। क्रोध भी ऐसी ही सहज वृत्ति है जो हर प्राणी में मौजूद रहती है। हम सबको क्रोध आता है। क्रोध आना स्वाभाविक वृत्ति है इसलिए हम प्रायः कहते हैं कि अमुक व्यक्ति को क्रोध आया या मुझे क्रोध आया। क्रोध का आना क्रोध के वशीभूत होना होता है। क्रोध के आने में हमारी कोई विशेषता नहीं है, सबको ही आता है लेकिन विशेषता यह होती है कि क्रोध आए नहीं बल्कि क्रोध किया जाए। हमारा प्रश्न हो सकता है कि क्रोध आने या क्रोध करने में क्या फर्क है, दोनों में ही प्रकट में तो क्रोध ही दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में आने और करने में बहुत बड़ा अंतर है। आने में कोई विशेषता नहीं है लेकिन क्रोध करने में निश्चित रूप से विशेषता है। करने वाले का अपने क्रोध पर नियंत्रण होता है, वह अपने क्रोध का उपयोग कर रहा होता है वहीं आने पर क्रोध नियंत्रण में नहीं होता बल्कि हम क्रोध के नियंत्रण में आ जाते हैं, क्रोध हमारा उपयोग कर रहा होता है। यही अंतर एक सामान्य मानव और महापुरुष में होता है। एक सामान्य व्यक्ति को स्वाभाविक रूप से क्रोध आता है और वह आया हुआ क्रोध उससे कुछ न कुछ अनर्थ करवा ही लेता है। लेकिन महापुरुषों को क्रोध आता नहीं बल्कि वे क्रोध किया करते हैं और उनका ऐसा क्रोध उनके आसपास रहने वाले लोगों के कल्याण का संदेश लेकर आता है। पूज्य तनसिंह जी के जीवन में एक ऐसी ही छोटी सी घटना हमारे लिए प्रेरणा का संदेश है। लोकसभा चुनाव हारने के पश्चात् पूज्य श्री ने कृषि यंत्रों का व्यवसाय प्रारम्भ किया एवं सिवाणा में दुकान की। उस समय पूज्य श्री के साथ श्रद्धेय नारायणसिंह जी रेड़ा, वर्तमान संघ प्रमुख भगवानसिंह जी एवं अन्य अनेक स्वयंसेवक भी रहते थे। नारायणसिंह जी के पास एक रेडियो था जिसे वे दुकान में काम करते समय धीमी आवाज में सुना करते थे। एक दिन नारायणसिंह जी कहीं बाहर पधारे हुए थे एवं पीछे से एक नए स्वयंसेवक ने रेडियो बजाना शुरू कर दिया। पूज्य श्री कोई काम कर रहे थे। उन्होंने ईशारों में रेडियो बंद करने का निर्देश दिया लेकिन उन स्वयंसेवक को कुछ समझ में न आया, उन्होंने ध्यान नहीं दिया। पूज्य श्री ने क्रोध कर उस रेडियो को उठाकर बाहर सड़क पर फेंक दिया। वर्तमान संघ प्रमुख श्री उसे उठाकर ले आए एवं उनके शांत होने पर निवेदन किया कि आपने क्रोधवश रेडियो बाहर फैंका, वह टूट जाता तो। पूज्य श्री का जवाब था कि यदि मैं असावधानीपूर्वक फैंकता तो अवश्य टूट जाता लेकिन मैंने फैंका ही इस प्रकार था कि उसका कोई नुकसान न हो। यदि हम क्रोधवश ऐसा करते तो निश्चित रूप से नुकसान होता लेकिन महापुरुषों का क्रोध नियंत्रित होता है, वह उन पर हावी नहीं होता बल्कि वे उस पर हावी होते हैं क्योंकि उनकी जागरुकता एवं सावधानी कभी कम नहीं होती लेकिन साथ ही वे अपने साथ रहने वालों की किसी भी कमजोरी पर उतने ही कठोर भी होते हैं। उनका कहना था कि नारायणसिंह रेडियो बजाते हैं इसलिए सभी रेडियो बजाने लगें यह उचित नहीं है, नकल करनी है तो नारायणसिंह बहुत से काम करते हैं वे सभी करना प्रारम्भ करो। वे कब रेडियो बजाते हैं, कितनी सावधानी के साथ बजाते हैं क्या इन्हें यह जानकारी है? इसलिए नकल करनी है तो उनकी उन सब श्रेष्ठताओं की नकल कर पात्रता हासिल करो और फिर उस पात्रता के बल पर आगे बढ़ो। ऐसा था उन महापुरुष का शिक्षण, नियंत्रण, जागरुकता एवं सावधानी। परमेश्वर हमें भी उनके मार्ग पर बनाए रखें एवं उनके जैसी जागरुकता, सावधानी एवं स्वयं पर नियंत्रण की ओर अग्रसर करें यही प्रार्थना समीचीन प्रार्थना कही जा सकती है और ऐसी ही प्रेरणा हमें हमारे जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ाएगी।

जीवनोपयोगी जानकारी-13

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(3) नर्सिंग : नर्सिंग हेल्थकेयर सेक्टर का एक महत्त्वपूर्ण व अविभाज्य अंग है। नर्सिंग कर्मी रोगियों की देखभाल तथा उपचार व सर्जरी आदि में चिकित्सकों का सहयोग करने का कार्य करते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की निरन्तर बढ़ती मांग के कारण इस क्षेत्र में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं। चूंकि विकसित देशों में प्रति हजार जनसंख्या पर संस्तुत नर्सिंगकर्मियों का अनुपात उच्च है, जिसकी तुलना में वहां उपलब्ध नर्सिंगकर्मियों की संख्या कम है, अतः भारतीय प्रशिक्षित व दक्ष नर्सिंगकर्मियों की विकसित देशों में अच्छी मांग है। यह रोजगार के साथ सेवा कार्य भी है तथा इसमें महिला-पुरुषों के लिए समान अवसर है। मरीजों की देखभाल में मातृत्व भाव के महत्त्व के अनुरूप ही यह महिलाओं की विशेष रूचि वाला क्षेत्र माना जाता है। भारत में उपलब्ध प्रमुख नर्सिंग कोर्सेज इस प्रकार है :

(i) ANM (Anxiliary Nursing and Midwifery) : यह दो वर्षीय डिप्लोमा है, जिसमें 6 माह की इन्टर्नशिप भी सम्मिलित है। कुछ संस्थानों में इसकी अवधि डेढ वर्ष की भी है। इसके लिए न्यूनतम योग्यता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है। न्यूनतम आयु 17 वर्ष व अधिकतम आयु 25 वर्ष है। यद्यपि जीव विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थियों को इसमें प्राथमिकता मिलती है, किन्तु अन्य विषय वर्ग के अभ्यर्थी भी इसमें प्रवेश हेतु पात्र हैं। सामान्यतया 12वीं कक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर निर्धारित वरियता सूची के अनुसार इसमें प्रवेश मिलता है, किन्तु कुछ संस्थान अपने स्तर पर प्रवेश परीक्षा व साक्षात्कार भी आयोजित करते हैं। विभिन्न संस्थान अपने यहां प्रवेश हेतु 12वीं कक्षा में न्यूनतम अंकों का मानक भी रखते हैं जो 40 से 50 प्रतिशत तक रहता है।

(ii) GNM (General Nursing and Midwifery) : यह भी डिप्लोमा कोर्स है, जिसकी अवधि साढ़े तीन वर्ष की है। इसमें छह माह की इन्टर्नशिप सम्मिलित है। इसमें प्रवेश प्रक्रिया व पात्रता शर्तें ANM के समान ही है। ANM डिप्लोमा कर चुके छात्र भी इसमें प्रवेश हेतु योग्य हैं। यह डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात स्टेट नर्स रजिस्ट्रेशन काउंसिल में रजिस्ट्रेशन करवाया जा सकता है।

(iii) B.Sc. Nursing (Basic) : यह स्नातक स्तर की डिग्री है तथा इसकी अवधि चार वर्ष है। इसमें प्रवेश हेतु अभ्यार्थी का 12वीं कक्षा जीव-विज्ञान वर्ग से न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। यद्यपि भिन्न-भिन्न संस्थानों में अनिवार्य न्यूनतम प्राप्तांक भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। अभ्यार्थी की आयु न्यूनतम 17 वर्ष होनी चाहिए।

(iv) B.Sc. Nursing (Post Basic) : यह भी स्नातक स्तर की डिग्री है, जिसकी अवधि 2 वर्ष है। इसमें प्रवेश हेतु अभ्यर्थी के पास GNM का डिप्लोमा होना अनिवार्य है तथा साथ ही उसका स्टेट नर्स रजिस्ट्रेशन काउंसिल में रजिस्ट्रेशन होना आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा विधि से किए जाने पर इस कोर्स की अवधि तीन वर्ष है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

श्राद्ध पक्ष

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भाद्रपद की पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर अश्विन मास की अमावस्या तक कुल 16 दिन की अवधि का पक्ष श्राद्ध पक्ष कहलाता है। भारतीय धर्मशास्त्रों में मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण बताए गए हैं। पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण। पितृ ऋण में पिता के अलावा वे सब परिजन आते हैं जिन्होंने हमें अपना जीवन धारण करने एवं उसका विकास करने में सहयोग दिया है। पितृ ऋण को चुकाने के लिए हम उनका वंश बढ़ाएं एवं उनको सम्मान दें तथा मृत्यु के उपरान्त उनका पिण्डदान कर जलांजलि देकर श्राद्ध करें। उसके उपरान्त मृत्यु तिथि पर हर वर्ष वार्षिक श्राद्ध करने की भी मान्यता है।

ब्रह्म पुराण के अनुसार अश्विन मास के कृष्ण पक्ष के दौरान यमराज सभी पितरों को अपने लोक से स्वतंत्र कर देते हैं ताकि वे अपनों श्राद्ध के लिए सन्तान के पास पृथ्वी पर आ सकें। श्राद्ध करने वाली संतानों को पितृदेव दीर्घ आयु, धनार्जन, सन्तति और विद्या आदि के साथ विभिन्न सांसारिक सुखों का आशीर्वाद देकर पुनः अपने लोक में चले जाते हैं ऐसी मान्यता है। विष्णु पुराण के अनुसार श्रद्धा सहित श्राद्ध करने से मनुष्य ब्रह्मा, इन्द्र, रूद्र, अश्विन कुमार, सूर्य, अग्नि, वसु, पितृ, पक्षी, पशु, ऋषि, भूतगण आदि सम्पूर्ण जगत को तृप्त कर देते हैं। यजुर्वेद के अनुसार श्राद्ध उन सभी के लिए है जो अब इस प्राणी संसार में नहीं हैं। जो जाने या अनजाने हैं उन सभी के निमित हमें पितृ यज्ञ करना चाहिए। हमने जीवन में अपनों को कष्ट दिया और अब उनका श्राद्ध करते हैं तो यह श्राद्ध मान्य नहीं है। परिश्रम एवं ईमानदारी से कमाए धन से ही श्राद्ध करना चाहिए। अर्थात 'श्रद्धयो दीपते तत् श्राद्धम।'

श्राद्ध पक्ष में विशिष्ट व्यंजन तैयार कर श्रद्धापूर्वक धूप ध्यान कर कौओं को आदर से भोजन कराया जाता है फिर सभी लोग प्रसाद पाते हैं। जिससे पितृ तृप्त होकर आशीर्वाद देते हैं, ऐसी धारणा बनी हुई है। भोजन मुख्यतः सात्विक होता है परन्तु कुछ लोग अपने पितरों को शामिष भोजन एवं मदीरा का प्याला भी अर्पित करते हैं जिसे सात्विक तो नहीं कहा जा सकता। श्राद्ध पक्ष में विभिन्न धार्मिक स्थलों, नदियों व सरोवरों आदि में जाकर भी श्राद्ध करने का प्रचलन है। बिहार राज्य के गया में जाकर पिण्डदान किया जाता है। यह श्राद्ध की विचारधारा की पूर्णाहूति का स्थान है। अर्थात् गया में पिण्डदान व श्राद्ध करने से पितृ आत्माएं तृप्त होकर स्वर्गवास हो जाती है फिर उनके श्राद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती। ऐसी बातें भी सुनी जाती हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दस दिन, पांच राज्य, 27 शिविर व लगभग 3000 शिविरार्थी

आसरलाई (जोधपुर)

बीजीए (बाड़मेर)

चूड़ी (गुजरात)

(पृष्ठ एक से लगातार)

अर्थात संघ कार्य में जुटे रहना है, निरन्तर निष्ठापूर्वक कर्म में लगे रहने पर ही संघ समझ में आएगा, आचरण में आएगा। शिविर में दासपां, कावतरा, दूदवा, भाटा, पूरण, केसुआ, सरण का खेड़ा, भीनमाल छात्रावास, बावतरा आदि से लगभग 120 युवा सम्मिलित हुए। दासपां गांव के राजपूत समाज ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी अवधि में पोकरण-नाचना प्रांत के रिड़मलसर गांव में स्थित दिव्य दृष्टि पब्लिक स्कूल के प्रांगण में भी शिविर का आयोजन हुआ। गणपतसिंह अवाय के संचालन में संपन्न शिविर में रिड़मलसर, खारिया, आऊ, चाडी, करणु, बेदु, बापिणी आदि गांवों से 200 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को कहा कि स्वयं श्रेष्ठ बनकर ही हम समाज और राष्ट्र को भी श्रेष्ठता के मार्ग पर अग्रसर करने में सक्षम बनेंगे। शिविर की व्यवस्था श्रवणसिंह रिड़मलसर ने संभाली। वागड़ प्रान्त में भी एक शिविर डूंगरपुर में 20-23 सितम्बर की अवधि में ही सम्पन्न हुआ। नागौर संभाग प्रमुख शिम्भूसिंह आसरवा के संचालन में लक्ष्मण राजूपत छात्रावास में सम्पन्न हुए शिविर में लाम्बापारडा, रेलड़ा, बेखरेड़, वणवासा, सागोट, आतरसुंबा, कानपुरा आदि गांवों के क्षत्रिय बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविरार्थियों को विदाई देते हुए अपने उद्बोधन में शिम्भूसिंह ने कहा कि हमें सतत रूप से अपना विश्लेषण करते रहना है। नियमित रूप से शाखा में जाकर अपने अभ्यास को पुष्ट करना है, जिससे हम संघ की मजबूत कड़ी बन सकें। वदनसिंह गेंहुवाड़ा तथा मनोहरसिंह रेलडा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी प्रकार जोधपुर संभाग में आसरलाई गांव में भी इसी अवधि में शिविर संपन्न हुआ, जिसमें पंचवटी आश्रम जोधपुर, राजपूत छात्रावास फलौदी, आदर्श विद्यालय देचू, सेखाला, बुडकिया, खिंयासरिया, सेतरावा, चौरडिया, बेलवा और आसरलाई से लगभग 115 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन जोधपुर संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने किया। उन्होंने युवाओं को पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए साधना मार्ग पर उत्साह व उमंग के साथ चलने की बात कही। उन्होंने कहा कि यह मार्ग सर्वांगीण है और हमारी समस्त भौतिक, मानसिक व आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है। व्यवस्था में आसरलाई के सौभाग्यसिंह, कानसिंह और जोगसिंह का सहयोग रहा। इसी अवधि में नागौर प्रांत के जायल मंडल के जालनियासर गांव में भी शिविर आयोजित हुआ। खींवसिंह सुल्ताना के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में जालनियासर, आंवलियासर, चाऊ, बागरासर, छापड़ा, सरासनी, लालगढ़, बोसेरी आदि गांवों के 70 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को बताया कि संघ एक संकल्प है जिसे पूरा करने का दायित्व हम पर है, एक स्वप्न है जिसे सत्य करने हम यहां एकत्रित हुए हैं। इसी प्रकार एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 20 से 23 सितम्बर तक रूद (चित्तौड़गढ़) में सम्पन्न हुआ। घनश्याम सिंह रूद के फार्म हाऊस पर आयोजित शिविर का संचालन उदयपुर संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला द्वारा किया गया तथा उन्होंने शिविरार्थियों को सचेत किया कि जागृत रहकर प्रत्येक कार्यक्रम में गंभीरता पूर्वक भाग लेंगे तो आप संघ को और उसके उद्देश्य को समझ सकेंगे। शिविर की व्यवस्था सुरेन्द्र प्रताप सिंह रूद ने संभाली। शिविर में रूद, जगपुरा, बेणिपुरिया, खेडिया, चंदनपुरा आदि गांवों तथा उदयपुर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, सवाई माधोपुर, अजमेर, जोधपुर, भीलवाड़ा, देवरिया (उ.प्र.) आदि जिलों के उदयपुर व चित्तौड़ में रहने वाले शिविरार्थी सम्मिलित हुए। चित्तौड़गढ़ संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली भी शिविर में उपस्थित रहे। इसी अवधि में बाड़मेर शहर प्रांत का शिविर भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में मल्लीनाथ छात्रावास, जय भवानी छात्रावास, मोहन गुरुकुल, मरुधर छात्रावास, कृष्णा छात्रावास, एम.एन. छात्रावास, मातेश्वरी छात्रावास, माजिया छात्रावास, भवानी छात्रावास की शाखाओं के लगभग 150 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। शिविर का संचालन भगवानसिंह दूधवा ने बाड़मेर संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा के निर्देशन में किया। शिविर के संचालक ने समाज में संघ कार्य के महत्त्व व आवश्यकता को बताते हुए सभी से इस कार्य में जुट जाने का आह्वान किया। व्यवस्था का जिम्मा अशोक सिंह भीखसर व नटवरसिंह झिंझनियाली ने संभाला। नागौर संभाग के अन्तर्गत डीडवाना मंडल के ग्राम जेवलियाबास में 20 से 23 सितम्बर की अवधि में शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन विक्रमसिंह ढींगसरी ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ तनसिंह जी के हृदय की व्यथा का प्रकटीकरण है। शिविर में जेवलियावास, बरागंना, खरेश, प्यांवा, सिंघाणा, आसरवा, ठाकरियावास, कुचामन सिटी, छापरी कल्ला, डसाणा कल्ला, गनोडा, खुनखुना, खानडी, आगरोट आदि गांवों के लगभग 72 बालक सम्मिलित हुए। मंगेजसिंह जेवलियाबास, गोपालसिंह जेवलियाबास, भरतसिंह जेवलियाबास आदि ने आयोजन व्यवस्था संभाली। वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा भी शिविर में उपस्थित रहे।

इसी अवधि में जयपुर संभाग के टोंक प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर नगर में आयोजित हुआ। शिविर संचालक जुगराजसिंह जुलियासर ने बालकों को क्षात्रधर्म के पालन हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। शिविर में कुराड, नगर, स्या, सीतापुरा आदि गांवों से युवा सम्मिलित हुए। व्यवस्था का जिम्मा महेन्द्रसिंह, हनुमानसिंह ने संभाला। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन भी रखा गया, जिसमें क्षेत्र के समाजबंधु सम्मिलित हुए। उत्तरप्रदेश में भी 20 से 23 सितम्बर की अवधि में दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए, जिसमें एक बालिकाओं का व एक शिविर बालकों का रहा। बालिका शिविर महोबा के पास स्थित चरखारी किले के राव बाग पैलेस में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन श्रीमती संतोष कंवर सिसरवादा ने किया। उन्होंने बालिकाओं से अपने दायित्व की गंभीरता समझने का आह्वान करते हुए कहा कि महिला पूरे परिवार की धुरी तो है ही, सामाजिक व राष्ट्रीय संस्कृति का भी आधार स्त्री भी है। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

दासपां (जालोर)

संपादकीय

सामाजिक एकता और व्यक्तिगत एजेंडा

विगत दिनों सोशल मीडिया में एक संदेश प्रसारित हुआ जिसमें हमारे समाज के विभिन्न संगठनों को संबोधित कर कहा गया कि आम राजपूत किसी भी बुलावे का पूर्ण समर्थन करता है। समाज का काम कहकर उससे सहयोग मांगने वाले हर व्यक्ति का सहयोग करता है उसके बावजूद सभी संगठनों के नेता आपस में एक राय होकर काम क्यों नहीं करते? निश्चित रूप से समाज के नाम से हर आने वाले का सहयोग करने को तत्पर रहने वाले हर व्यक्ति के मन में ऐसा प्रश्न उठेगा और ऐसा प्रश्न उठना स्वाभाविक भी है। पूरा समाज एक हो, सभी लोग एक लक्ष्य के लिए गतिमान हों ऐसा कौन नहीं चाहेगा? लेकिन विचारणीय विषय यह है कि क्या इस चाह का मूर्त रूप लेना व्यवहारिक है? क्या ऐसा संभव है? एकता की चाह दूसरे रूप में संगठन की चाह है, संगठित होकर एक लक्ष्य की ओर गतिमान होने की चाह है। पूरा समाज संगठित होकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एक लक्ष्य की ओर प्रवाहित करे यह एक आदर्श है और आदर्श की चाह होना कोई गलत नहीं है। लेकिन विचार करना यह आवश्यक है कि क्या ऐसा आदर्श व्यवहारिक भी है कि वर्तमान समय में समाज में काम कर रहे सभी संगठन यथा रूप एक जगह से संचालित होने लगें, एक दिशा में प्रवाहित होने लगें। यहां हम एक शब्द का उपयोग कर रहे हैं 'सामाजिक संगठन'। तब पहले तो यह विचार करना चाहिए कि जिन संगठनों को हम सामाजिक संगठन के नाम से संबोधित कर रहे हैं क्या वे सामाजिक भी हैं? सामाजिक संगठन उसे कहते हैं जिसके केन्द्र में समाज हो। जिसकी समस्त गतिविधियां इस केन्द्र के चारों ओर केन्द्रित हों। जिसका लक्ष्य समाज हो एवं मार्ग केवल और केवल समाज की ओर गतिमान हो। यदि उस तथाकथित सामाजिक संगठन का लक्ष्य उस संगठन विशेष का लाभ हो तो क्या वह संगठन सामाजिक होगा? यदि उस संगठन का लक्ष्य अपने संगठन के किसी घटक को प्रतिष्ठा प्रदान करना हो तो क्या वह संगठन सामाजिक होगा? यदि उस संगठन का लक्ष्य उस संगठन के नेता को प्रतिष्ठा प्रदान करना मात्र हो तो क्या वह संगठन सामाजिक होगा? इससे भी हल्के स्तर पर जाएं तो जिस संगठन का लक्ष्य येन-केन प्रकारेण स्वयं के लिए या स्वयं के संगठन से जुड़े व्यक्ति के लिए या संगठन के नेता के लिए कुछ भौतिक प्राप्तियां मात्र हों क्या हम उसे सामाजिक संगठन कहेंगे? जिन संगठनों को हम सामाजिक संगठन कह रहे हैं यदि उन्हें उपर्युक्त प्रश्नों की कसौटी पर कसना चाहेंगे तो ज्ञात होगा कि वे वास्तव में कितने सामाजिक हैं? इस मूल्यांकन के बिना इस प्रकार की चाह रखना राम और रावण को साथ लाने की चाह जैसा है। ऐसा नहीं है कि भूतकाल में या निकट भूतकाल में ही ऐसे प्रयास नहीं हुए लेकिन उनका हश्र क्या हुआ वह हमारे सामने है। ऐसा भी नहीं है कि निकट भविष्य में ऐसा प्रयास नहीं किया जाएगा लेकिन यदि इन प्रश्नों के उत्तर खोजे बिना ऐसा प्रयास किया जाएगा तो उसका हश्र भी ऐसा ही होगा? किसी भी संगठन के प्रति आग्रह दुराग्रह रखे बिना यदि हम विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि जिन संगठनों की हम बात कर रहे हैं उनमें से अधिकांश का केन्द्र समाज नहीं है। उनमें से कई तो नितांत रूप से किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत एजेंडा को पूरा करने के लिए बनाए गए समूह मात्र हैं जो येन-केन प्रकारेण उस एजेंडा को जमीन पर उतारना चाहते हैं। ऐसे व्यक्तिगत एजेंडा वाले लोग आपस में मिलें तो उनमें समझौते हो सकते हैं संगठन नहीं। समाज को आज समझौतों का नहीं संगठन की आवश्यकता है। समझौतों का आधार प्राप्तियां हुआ करता है। समझौता करने वाले आपस में एक दूसरे के लिए कुछ छोड़ने और प्राप्त करने के वादे के साथ एक होने का प्रपंच करते हैं। जब वे वादे निभ नहीं पाते तो समझौते टूट जाया करते हैं और परिणाम होता है बिखराव तथा पीछे चलने वाले समाज में निराशा। इसलिए ही यथारूप सबके येन-केन प्रकारेण एक होने की चाह अधीर एवं अपरिपक्व चाह है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि आम राजपूत क्या करे? क्या वह ऐसी चाह भी नहीं रखे? निश्चित रूप से रखे लेकिन उस चाह के अनुकूल आचरण भी करे। समाज की बात एक भावनात्मक बात है। भावनाओं के आवेग के बिना कोई समाज के नाम पर सहयोग करने को तैयार नहीं होता। भावनाओं के आवेग में ही हम उपर्युक्त प्रश्नों का अनसुना करते हैं लेकिन भावनाओं के साथ विचारशीलता का मेल नहीं हो तो भावनाओं का शोषण भी आसानी से होता है। इसलिए विचार करें कि हम किसी शोषण के शिकार तो नहीं हो रहे हैं? कोई हमारी सामाजिक भावना का उपयोग अपने व्यक्तिगत एजेंडा के लिए तो नहीं कर रहा है और यदि भावनाओं के साथ-साथ ऐसी विचारशीलता पनप जाएगी तो कोई समाज के नाम पर, राष्ट्र के नाम पर हमारा शोषण नहीं कर पाएगा। इससे केवल हम हमारा ही शौषण नहीं रोक पाएंगे बल्कि समाज और राष्ट्र के नाम पर भावनाओं को भड़का कर शोषण करने वाले शोषकों के सहयोगी न बनकर हम पूरे समाज और राष्ट्र को बचा सकेंगे।

खरी-खरी

कागजी समीक्षक

पूज्य तनसिंह जी के साहित्य में उल्लेख मिलता है कि कहीं आग लगी हुई थी और अनेक लोग उसे बुझाने का प्रयास कर रहे थे लेकिन एक सज्जन दूर बैठे दत्तचित्त होकर कुछ लिख रहे थे। पूज्य श्री ने उनसे पूछा कि आप आग बुझाने की अपेक्षा यहां क्या कर रहे हो तो उन सज्जन ने जवाब दिया कि मैं इतिहास लिख रहा हूं जिससे आने वाली पीढ़ी को आंखों देखा हाल जानने को मिल सके कि आग को बुझाने के लिए लोगों ने कितना परिश्रम किया था। पूज्य श्री ने उल्लेख किया है कि उन्होंने उन इतिहासकार से कहा कि इसमें यह भी लिख देना कि तुम आग बुझाने की अपेक्षा इतिहास लिख रहे थे। आज सोशल मीडिया एवं अन्यत्र इसी प्रकार के इतिहासकारों एवं समीक्षकों की बाढ़ आई हुई है जो नितांत कागजी हैं। वे बिस्तर में सोये-सोये समाज की परिस्थितियों की ऐसी समीक्षा करते हैं जैसे सब कुछ उनके अनुभव से गुजर चुका हो। धरातल पर उन्हें खोजने जाएंगे तो वे गधे के माथे पर से गायब सींगों की तरह कहीं नहीं दिखाई देंगे। ऐसे समीक्षक उन लोगों, संगठनों एवं परिस्थितियों की अधिकार पूर्वक समीक्षा करते हैं जिनसे प्रत्यक्षतः उनका कभी वास्ता ही नहीं रहा। विगत दिनों सोशल मीडिया पर ऐसे ही एक सज्जन की टिप्पणी देखने को मिली जिसमें वे लिख रहे है, कि श्री क्षत्रिय युवक संघ निराशावादी संगठन है। विगत 20-22 वर्षों से संघ में जा रहा हूं लेकिन उन सज्जन को कभी संघ के किसी कार्यक्रम में नहीं देखा। संघ के किसी शिविर, शाखा में उनके दर्शन नहीं हुए तब समझ में नहीं आता कि उन्होंने संघ को कब और कैसे समझ लिया और साथ में प्रमाण-पत्र भी दे दिया कि संघ समाज में नैराश्य का वातावरण उत्पन्न करता है। एक-दूसरे सज्जन ने एक जगह लिखा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ युवाओं का आकर्षण क्यों नहीं बन पा रहा है? वे दूसरों के लिए ऐसा प्रशन पूछने की अपेक्षा स्वयं से पूछते कि संघ उनका आकर्षण क्यों नहीं बन पाया? क्यों नहीं वे अपने फोरी सम्पर्क को गहराई प्रदान कर पाए तो शायद उनके जेहन में यह प्रश्न ही नहीं उठता कि संघ युवाओं का आकर्षण क्यों नहीं बन पाता? संघ आकर्षण की वस्तु नहीं बल्कि साधना का मार्ग है। उर्ध्वाधर गति का मार्ग है, ऊपर उठने का मार्ग है और ऊपर उठने के लिए स्वयं को साधना पड़ता है, तपाना पड़ता है और स्वाभाविक रूप से ताप, ताड़न और छेदन को बिना किसी अंतःप्रेरणा के कोई स्वीकार नहीं करता। जो लोग दूसरों को सलाह देते हैं या बिस्तर में बैठे समीक्षा करते हैं क्या वे यह बता पाएंगे कि आपने ताप, ताड़न और छेदन को स्वीकार क्यों नहीं किया? ताप, ताड़न और छेदन को स्वीकार करने के लिए अपने आपको सौंपना पड़ता है। सोना जब आभूषण बनने के लिए सुनार के हाथ में जाता है तो सम्पूर्ण समर्पण के साथ जाता है, उसकी स्वयं की कोई शर्त नहीं होती और इसीलिए सुनार अपने अंतर की सम्पूर्ण कठोरता और कोमलता से उसे आभूषण का स्वरूप प्रदान करता है। जिनको ताप, ताड़न और छेदन स्वीकार नहीं वे साधना के मार्ग पर नहीं आया करते और इतिहास गवाह है कि ऐसी साधना करने वाले लोग बहुतायत में नहीं हुआ करते इसीलिए बिस्तर में बैठकर समीक्षा करने वालों से यही आग्रह है कि फोन के की-बोर्ड पर उंगलियां चलाकर संघ की समीक्षा करने की अपेक्षा मैदान में आएं और यदि आप मैदान में है तो जो काम कर रहे है उस पर टिप्पणी करें। संघ कोई बौद्धिक चोंचलेबाजी नहीं है जिसे पुस्तक पढ़कर समझा जावे। यदि संघ को समझना है तो शाखा के मैदान में आकर प्यारी पूसी खेलें तब समझ में आएगा कि संघ निराशा पैदा करता है या राख में छिपी चिंगारी को ढूंढ कर अंगारे तैयार कर रहा है। संघ को बुद्धि से नहीं समझा जा सकता क्योंकि बुद्धि कभी नहीं बता सकती कि कोई बीज अपने उदर को चीरकर पेड़ बनने के लिए क्यों समाप्त होता है या कोई मां क्यों स्वयं गीले में सोकर अपनी संतान को सूखे में सुलाती है? कोई सैनिक क्यों अपने राष्ट्र के लिए मौत का आलिंग्न करता है यह सब बुद्धि से नहीं समझा जा सकता। त्याग की परिभाषा बुद्धि नहीं बता सकती और जिनका लक्ष्य प्राप्ति ही हो, जिनकी समस्त गतिविधियां सफलता की चाह के ईर्द-गिर्द घूमती हो वे गीता के निष्काम कर्मयोग को नहीं समझ सकते और जो गीता के निष्काम कर्मयोग को नहीं जानता उसे संघ की समझ कहां से आएगी। ऐसे लोग तो स्वयं को महत्त्वपूर्ण मानते हैं और अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति न होने पर असहमति जताकर समीक्षक बनने का स्वांग रचते हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**चौबारा**। दिल्ली-जयपुर नेशनल हाईवे-8 पर शाहजहांपुर से 1 किमी दूर।
2.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**कालाथल** (बाड़मेर)। बालोतरा, गिड़ा, पाटोदी से बसें है।
3.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**कड़वा** (ओसियां)। जिला जोधपुर।
4.	प्रा.प्र.शि.	11.10.2018 से 14.10.2018 तक	**बंगलौर** (कर्नाटक), 11 अक्टूबर की शाम से। **सम्पर्क सूत्र :** 7892463650, 7338330715
5.	मा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	सुजानसिंह का फार्म हाउस, **जूना,** जिला बाड़मेर। बाड़मेर से जूना पतरासर रोड।
6.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 17.10.2018 तक	**किशनगढ़**। राजपूत सभा भवन, फतेहलालनगर, मझेला रोड, किशनगढ़ (अजमेर)। **सम्पर्क सूत्र :** 9602246116, 7737728451
7.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 17.11.2018 तक	**चारणवाला** (बीकानेर)। बज्जू, बाप, नाचना से बसें उपलब्ध।
8.	मा.प्र.शि.	15.10.2018 से 21.10.2018 तक	**अमृतनगर**, बालेसर सतां (शेरगढ़), जिला जोधपुर। श्रीलाल उ.मा.वि. अमृतनगर।
9.	प्रा.प्र.शि.	16.10.2018 से 19.10.2018 तक	करड़ेश्वर महादेवर **करड़ा** (जालोर)। भीनमाल, सांचौर से बस।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	17.10.2018 से 19.10.2018 तक	**रामदेवरा**। जिला जैसलमेर। पोकरण, फलोदी, जैसलमेर से रेल व बस सुविधा।
11.	प्रा.प्र.शि.	19.10.2018 से 22.10.2018 तक	लोहागर मंदिर, **सुमेर** (पाली)। देसूरी व जोजावर से साधन। **सम्पर्क सूत्र :** 8094010093
12.	प्रा.प्र.शि.	19.10.2018 से 22.10.2018 तक	**खारा** (बीकानेर)। बीकानेर से लूणकरणसर मार्ग पर।
13.	प्रा.प्र.शि.	25.10.2018 से 28.10.2018 तक	शंखेश्वर महादेव **डोडियाली** (जालोर)। हरजी व उम्मेदपुर से बस व टैक्सी।
14.	मा.प्र.शि.	25.10.2018 से 31.10.2018 तक	**कानोड़** (सिवाना) जिला बाड़मेर। बायतु, गिडा, बालोतरा से बस है। 'शक्तिमान', कोजराजसिंह की ढाणी।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.10.2018 से 28.10.2018 तक	बी.जे.एस. कॉलोनी। **जोधपुर**।
16.	मा.प्र.शि.	26.10.2018 से 01.11.2018 तक	**बाप** (जोधपुर)। जैसलमेर, पोकरण, फलोदी, बीकानेर से हर समय बस। **सम्पर्क सूत्र :** 9672840955, 9414149797
17.	मा.प्र.शि.	26.10.2018 से 01.11.2018 तक	**राणियाबास** (नायला) जिला-भीलवाड़ा। **सम्पर्क सूत्र :** 9414228383
18.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2018 से 29.10.2018 तक	**खेतलावास**। (जालोर)। सायला-जीवाणा से टैक्सी।
19.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2018 से 29.10.2018 तक	हनुमानजी का मंदिर **भवानीगढ**। जिला सिरोही। रेवदर व जसवंतपुरा से बस व टैक्सी।
20.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2018 से 29.10.2018 तक	निम्बेश्वर महादेव मंदिर, **सांडेराव** जिला पाली। **सम्पर्क सूत्र :** 9887114322
21.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2018 से 29.10.2018 तक	**बोघेरा** (चूरू)। सरदारशहर निजी बस स्टैण्ड से प्रातः 7.30, 9.00, 11.45 तथा 1.00 बजे साहवा रूट पर जाने वाली बस से बोघेरा उतरें।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ तीन से लगातार)

सामाजिक कार्यकर्ता पुष्पासिंह व ललिता राजे ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। पूर्व युवरानी मोनासिंह भी पूरे शिविर में उपस्थित रही। इसी प्रकार बालकों का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर रोशनसिंह बदनसिंह इण्टर कॉलेज कबरई में आयोजित हुआ, जिसका संचालन राजेन्द्र सिंह बोबासर ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदा देते हुए कहा कि आपके क्षेत्र में संघ कार्य की बहुत आवश्यकता और मांग है, जिसे आपको ही पूरी करना है।

धंधुका (गुजरात)

19 से 22 सितम्बर तक बाड़मेर संभाग में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर शिव प्रांत में भिंयाड़ मण्डल के बाटाड़ा झाक गांव में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए गणपतसिंह बूठ ने शिविरार्थियों से कहा कि हमें कर्म क्षेत्र में जाकर यहां से प्राप्त प्रशिक्षण से अन्यों को भी प्रेरित करना है, अन्य बन्धुओं को हमारी दैनिक शाखाओं से जोड़ते हुए घर-घर में संघ मंत्र का संचार करना है। शिविर के दौरान गौरवपूर्ण क्षत्रिय इतिहास, धर्म, संस्कृति से बालकों को परिचित कराया गया। शिविर में झाक, मौखाब, आरंग, चोचरा, भिंयाड़, ऊण्डू, धारवी, शिव, मुंगेरिया, निम्बला, कोटड़ा, जालेला, बांदरा, बूठ, आगोरिया, बाड़मेर आदि से 110 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। व्यवस्था में चैनसिंह, सांवलसिंह, कमलसिंह, बागसिंह, मेहताबसिंह आदि ग्रामवासियों का सहयोग रहा। बाड़मेर संभाग के ही गुड़ामालानी प्रांत में उण्डखा मण्डल का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर जेठमाल सिंह की ढाणी स्थित प्राथमिक विद्यालय में इसी अवधि में संपन्न हुआ। लालसिंह आकोड़ा के संचालन में सम्पन्न शिविर में शिविर प्रमुख ने शिविरार्थियों से संघ को सदैव स्मरण रखने तथा शाखा व शिविर की नियमितता बनाए रखने की बात कही।

बीकानेर संभाग में भी 19 से 22 सितम्बर की अवधि में नोखा गांव स्थित रुपनाथ जी मंदिर के प्रांगण में शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालक रेवंतसिंह जाखासर ने कहा कि संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में वर्णित क्षात्रधर्म के व्यावहारिक अभ्यास का मार्ग है। अतः बार-बार शिविरों में आकर इस अभ्यास को स्थायी बनाए। शिविर में मोरखाना, किरतासर, शोभाणा, भादला, सारुण्डा, जांगलू, गीगासर, पुन्दलसर, झंझेऊ आदि गांवों के लगभग 125 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। ग्रामवासियों ने मिलकर शिविर की व्यवस्था संभाली। शिविर के दौरान ही 21 तारीख को जोरावरसिंह भादला की उपस्थिति में महिलाओं व बालिकाओं के एक स्नेहमिलन का आयोजन हुआ, जिसमें आदर्श परिवार में महिला की भूमिका पर चर्चा की गई। जैसलमेर जिले के गांव डाबला में भी एक शिविर 19 से 22 सितम्बर को आयोजित हुआ जिसका संचालन नरेन्द्रसिंह तेजमालता ने किया। शिविर में मूलाना, बडोड़ागांव, सितोड़ाई, ऊण्डा, आकल, जोधा, तेजमालता, म्याजलार, झिंझनियाली, बेरसियाला, रामगढ़ सेरवा, पूनमनगर, मोढा, जोगीदास का गांव, म्याजलार, रणधा, जैसलमेर शहर, देवीकोट, डाबला आदि गांवों के 165 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शिविर प्रमुख ने बालकों को क्षात्र धर्म की परिभाषा बताई और कहा कि सभी प्रकार के क्षय से समस्त सृष्टि की रक्षा करना ही क्षत्रिय का कर्तव्य है। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा, वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला, चांधन प्रांत के प्रमुख तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली आदि स्वयंसेवकों ने शिविर में प्रशिक्षण में सहयोग किया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

महाराजा बख्तसिंह जी जोधपुर का भोपोलाव तालाब स्थित देवल

महाराजा बख्तसिंह जी मारवाड़ (जोधपुर) अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में अपार आत्मशान्ति थी जिसने निर्भयता और उदारता के बीच सुदृढ़ सामंजस्य स्थापित कर उन्हें एक अति प्रबल और प्रतापी शासक बना दिया। काव्य प्रतिभा से सर्जित उनका असाधारण चित्त, देश साहित्य में रमा बसा है। एक अपरिहार्य घातक अपराध को छोड़, भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित हुए संभ्रात प्रधानों में से वे एक थे। सरबुलंद के खिलाफ अहमदाबाद और गगवाना के युद्ध में प्रदर्शित उनकी वीरता और रण कौशल अप्रमेय था जिसको समकालीन इतिहासकारों ने अनुपम करार दिया।

महाराजा बख्तसिंह जी महाराजा अजीतसिंह जी जोधपुर के द्वितीय पुत्र थे। इनका जन्म विसं 1763 की भादो बदी सप्तमी तदानुसार 19 अगस्त 1706 को हुआ था। वि.सं. 1808 की श्रावण बदी दूज तदानुसार 29 जून 1751 को वे जोधपुर के शासक बने। इससे पूर्व उन्होंने 22 वर्ष तक नागौर पर शासन किया।

महाराजा बख्तसिंह जी का स्वार्गवास तत्कालीन जयपुर रियासत के गांव सिंधोली (सोनेली) के तालाब भोपोलाव की पाल पर वि.सं. 1809 की भादो सुद तेरस (21 सितम्बर 1752) को हुआ था। भोपोलाव का तालाब किशनगढ़-मालपुरा सड़क पर मालपुरा से 10 किमी पहले, सड़क के करीब एक किमी दाहिनी तरफ स्थित है। यह तालाब हरियाली से आच्छादित पाल की सुन्दरता को और अधिक रणणीयता प्रदान करता है। ख्यातों में लिखा है कि महाराजा बख्तसिंह जी हुरड़ा कान्फ्रेंस की भावना के अनुरूप जयपुर नरेश महाराजा माधवसिंह जी को साथ लेकर मराठों पर, जिन्होंने पूरे प्रदेश में लूटमार मचा आतंक फैला रखा था-चढ़ाई करना चाहते थे। मेवाड़ नरेश महाराणा जगतसिंहजी द्वितीय की भी इस सामरिक अभियान में सम्मति थी। परन्तु दुर्भाग्य से महाराणा जगतसिंह जी का देहान्त हो गया और बदलती परिस्थितियों में माधवसिंह जी जयपुर का इस अभियान में भाग लेने का साहस नहीं हुआ। यही नहीं जयपुर नरेश को यह भ्रम भी सताने लगा कि कही बख्तसिंह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए उनके राज्य जयपुर में बखेड़ा खड़ा न कर दे। बख्तसिंह जी से निजात पाने के लिए जयपुर नरेश ने एक षड्यंत्र रचा। उन्होंने अपनी रानी जो किशनगढ़ नरेश की राजकुमारी होने के नाते रिश्ते में बख्तसिंह जी की भतीजी थी, को कहकर उन्हें मिलने के लिए आमंत्रित करवाया और वहां पर इन्हें एक ऐसा विषाक्त फूलों का हार पहनाया, जिसके स्पर्श से बख्तसिंह जी अचानक बीमार हो गए और शरीर त्याग दिया। कहीं-कहीं विषाक्त पोशाक (खिलात) और कही भोजन में जहर देने का भी उल्लेख आता है। विदेशी धरती (मारवाड़ से बाहर) पर शरीर त्याग को कुछ लोग सती के श्राप से जोड़ते हैं।

महाराजा बख्तसिंह जी, अन्तकाल के बाद भूतयोनी में रहे, बे-मौत मारे जाने से उन्हें मुक्ति नहीं मिली, ऐसा माना जाता है। लोगों की मान्यता है कि दाह संस्कार के स्थान (भोपोलाव) पर तब से प्रतिदिन रात्रि के समय उनकी महफिल आयोजित होने लगी। इसी कारण सायंकाल के पश्चात लोगों का वहां आना-जाना बंद हो गया। उनके थड़े पर दिन के समय नित्य पूजा पाठ किया जाने लगा। उन्हें देवता के समान पूजा जाने लगा। आसपास के लोग उनसे मुराद पूरी करने हेतु मन्नत करने लगे। प्रचलित है कि थड़ा मंगल होने से पहले कोई भी अपनी समस्या कागज पर लिखकर थड़े पर छोड़ जाता तो दूसरे दिन उनका समाधान/जवाब मिल जाया करता था। महफिल से संबंधित एक घटना का लोग हवाला देते हैं कि देवगांव बघेरा के रणजीतसिंह जी एक रात्रि के समय यहां से गुजरते हुए वहां रुके। उन्होंने बख्तसिंह जी की महफिल देखी और उसमें शरीक भी हुए। दूसरे दिन बघेरा पहुंचते ही उनका निधन हो गया। महाराजा बख्तसिंह जी की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र महाराजा विजयसिंह जी जोधपुर ने भोपोलाव तालाब की पाल पर संवत 1818 से 1822 के बीच एक भव्य देवल का निर्माण करवाया। यह देवल तत्कालीन दीवान मूहणोत सुरतराम के निर्देशन में बनाया गया तथा इसकी सम्पूर्ण निर्माण सामग्री मारवाड़ से यहां लाई गई। राजपूत-मुगल वास्तुकला में निर्मित यह देवल आज भी अपने वैभव के साथ खड़ा है। जोधपुर के लाल पत्थर से निर्मित यह देवल लगभग 65 गुणा 65 फुट के क्षेत्रफल में निर्मित है। चारों तरफ परकोटा बना है तथा प्रवेश द्वार के ठीक सामने 35 गुणा 35 फुट का एक थड़ा बना हुआ है जिस पर 15 गुणा 15 नाप का गृर्भगृह बना हुआ है जिसके द्वार चारों तरफ निर्मित बरमादे में खुलते हैं। चारों दिशाओं में बने बरामदे एक समान है। छत पर चारों कौनों में एक समान छोटे और गृभगृह के ऊपर बड़े आकार का गुम्बज बना हुआ है। गृभगृह के मध्य भाग में सफेद पत्थर का शिवलिंग स्थित है जिसके ठीक लगता एक बड़ा सफेद पत्थर है उसके बीच में चरण पादुकाएं बनी हैं और दोनों तरफ चांद और सूरज बने हैं। इस पत्थर के एक तरफ लेख खुदा हुआ है जिस पर देवल के निर्माण की जानकारी लिखी है। इसके बाई तरफ तीन नन्दी स्थापित है (नन्दी के सींग और कान खण्डित है)। देवल के पुजारी सनद परवाना बही से ज्ञात होता है कि देवल बनना प्रारम्भ होने के साथ ही पूजा शुरू हो गई थी। संवत 1821 की मिगसर सुद तीज को जोधपुर महाराजा विजयसिंह जी का आदेश हुआ कि बड़ा महाराजा जी के देवल पर मंदिर में पूजा के लिए केशर, चावल, धूप सामग्री, रुसनाई के लिए तेल आदि राज्य की ओर से दिया जावे तथा पुरोहित कचरोजी को वहां रखा गया साथ ही भगत नन्दराम को देवल पर तैनात करने का उल्लेख मिलता है जिनमें गुमानो माली बखता आदि जिन्हें परबतसर की कचेड़ी से रोजगार दिया जाता था। एक अन्य उल्लेख के अनुसार देवल की प्रतिष्ठा 1820 (1763 ई.) की ज्येष्ठ सुद पांचम को करवाई गई थी इस अवसर पर बेदिया देवकरण जोशी नंदलाल जी जो दान की राशि ग्रहण करते थे। प्रतिष्ठा के पश्चात् देवल की सेवा पूजा के लिए सेवग पुरोहित कचरदास कालीदासोत को रखा गया था। महाराजा बख्तसिंह जी के पिण्डदान के लिए बिहार स्थित गयाजी नागर हरदास को भेजा जिसने महाराजा विजयसिंह जी की ओर से महाराजा बख्तसिंहजी का संवत् 1820 (1763 ई.) पिण्डदान किया, साथ में वेदिया रामदत्त को भी भेजा गया था। सन् 1993 में जोधपुर के वर्तमान महाराजा श्री गजसिंह यहां पर दर्शन करने पधारे तब पुजारी जी ने उनको बताया कि उन्होंने यहां पर गायत्री महायज्ञ और गरुड़ पुराण के अनेक पाठ करवाए और पिछले तीन वर्षों से वे यहां रात्रि में भी रहने लगे हैं। अब दिवगंत महाराजा बख्तसिंह जी को मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त हो चुकी है। स्थान पूजनीक है तथा चमत्कारी है और श्रद्धालुओं की पीड़ा हरण करने के कारण बहुत मान्यता प्राप्त और प्रसिद्ध भी है। वर्तमान में दाधीच ब्राह्मण पूजा करते है तथा ये कवचगोत्री हैं। इन्हें कब और किसने यहां पूजा करने के लिए नियुक्त किया इसका उल्लेख कही नहीं मिलता है। सबसे पहले रामरतनजी महाराज यहां पूजा करने आए थे। इनके चार पुत्र हुए जिनमें चौथे पुत्र रतनलालजी उनके पश्चात् पूजा करने लगे और फिर मूरालाजी और उनके तीन पुत्र रामेश्वरजी, रामस्वरूपजी और रामनायारणजी है, जो बारी-बारी से पूजा करते हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु देवल के सामने भोपोलाव तालाब की पाल पर एक विश्राम गृह का निर्माण श्री सुमेरसिंहजी दाबड़दूम्बा ने करवाया है। इस स्थान पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के दो शिविर भी आयोजित किए जा चुके हैं। ● **कर्नल हिम्मतसिंह पीह**

शिलालेख

श्री गणेशाय नमः श्री श्री महाराजाधिराज श्रीश्री बख्तसिंहजी का देवल की नींव दीनी संवत् 1818 का मे सु सम्वत 1822 में श्री जीरी पादुका पदराई और प्रतिष्ठा हुई श्री पावे नवगढ जोधपुर रा धणी न दीवान मुहणोत श्री सूरतराम री मार्फत द्वारा हस्तु व्यास देवकिशन पुरोहित स्ववास सेवा केशर चन्दन चढासी श्री भागवत जी रा पाठ सुनासी श्री देवल री बन्दगी करसी ने श्री जी ने आशीर्वाद देसी दुरवासी ठाकुरा श्री सूरतरामजी रो मार्फत्।

(पृष्ठ पांच से लगातार) पाली प्रान्त के सोजत मंडल का शिविर 21 से 24 सितम्बर तक गोपाल दाता का धुणा, बलाडा (जैतारण) में आयोजित हुआ, जिसमें बलाडा, घोड़ावड़, राबड़ियावास, मुरडावा, रायपुर, करमावास, बर सहित आसपास के गांवों के 52 युवाओं ने भाग लिया। महोब्बतसिंह धींगाणा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने युवाओं से संघ कार्य में मगन होकर जुट जाने की बात कही और बताया कि हमारी सामाजिक समस्याओं के समाधान का यही एकमात्र मार्ग है। शिविर समापन के अवसर पर आसपास के गांवों से पधारे समाज बंधुओं को हीरसिंह लोडता द्वारा संघ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई। शिविर की व्यवस्था चेनसिंह बलाडा व रामसिंह हाजीवास ने संभाली। मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत में सचाणा गांव के निकट मेलडी माताजी के मंदिर परिसर में 21 से 23 तक शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन बटुकसिंह काणेटी ने किया, जिन्होंने कहा कि सफलता-असफलता से पार जाकर ही संघ का काम किया जा सकता है। व्यवस्था दिवानसिंह काणेटी ने संभाली। जालोर संभाग के सांचौर प्रांत में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर विरोल में 18 से 21 सितम्बर तक सम्पन्न हुआ। शिविर में विरोल, सुरावा, कारोला, सिवाड़ा, पांचला, आकोली, डावल, रतनपुर, केरिया सहित क्षेत्र के अनेक गांवों के लगभग 130 युवाओं ने चार दिनों तक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली में स्वयं को ढालने का अभ्यास किया।

खंगटा (जोधपुर)

शिविर का संचालन शक्तिसिंह आशापुरा ने किया। उन्होंने कहा कि हम सभी सवयंसेवक संघ की इस वृहद श्रृंखला में एक कड़ी हैं, अतः हम मजबूत बनेंगे तो संघ मजबूत बनेगा। शिविर समाप्ति के तुरन्त बाद उसी स्थान पर स्नेहमिलन का आयोजन हुआ जिसमें क्षेत्र के प्रबुद्ध क्षत्रिय बंधुओं ने भाग लिया। सभी समाजबंधुओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य की सराहना की तथा गीता, शराब बंदी, शारीरिक स्वास्थ्य, व्यसन मुक्ति, शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि विषयों पर चर्चा की। देवेन्द्रसिंह विरोल, धनसिंह विरोल, गणपतसिंह विरोल ने मिलकर आयोजन की व्यवस्था संभाली।

हरियाणा के गुडगांव जिले में स्थित भोंडसी गांव में भी एक शिविर 21 से 23 सितम्बर की अवधि में सम्पन्न हुआ। आर.बी.एस.एम. विद्यालय में आयोजित इस शिविर में भोंडसी, घामडोज गांवों के साथ ही दिल्ली शहर के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजस्थान व गुजरात से भी स्वयंसेवक शिविर में सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन अभयसिंह रोडला ने दिल्ली प्रांत प्रमुख रेवतसिंह धीरा के सहयोग से किया। शिविर प्रमुख ने शिविरार्थियों से संघ के विश्वास और आशा पर खरा उतरने की बात कही। धामडोज गांव के अनीश सिंह, अरुणसिंह व लोकेशसिंह ने आयोजन की व्यवस्था संभाली। गुजरात के भाल प्रांत में धंधुका राजपूत बोर्डिंग में भी इसी अवधि में शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन भागीरथसिंह साढ़खाखरा ने किया। शिविर में राजकोट छात्रावास, वल्लभीपुर छात्रावास, भावनगर छात्रावास, लिखडी छात्रावास सहित सौराष्ट्र क्षेत्र की लगभग सभी राजपूत बोर्डिंग से 165 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर प्रमुख ने युवाओं को आपसी एकता बनाए रखने की बात कही। शिविर की व्यवस्था चुडासमा राजपूत छात्रावास धंधुका द्वारा की गई। गुजरात के मेहसामा प्रांत में सिद्धपुर शहर में सरस्वती नदी के तट पर स्थित वालकेश्वर महादेव मंदिर में 15 से 17 सितम्बर तक शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन विक्रमसिंह कमाना द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि संघ कार्य, ईश्वरीय कार्य है, अतः आस्थावान बने रहें। आस्था ही हमारी निष्ठा की पूरक बनेगी। शिविर में लगभग 20 गांवों के 120 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। गोपालसिंह खोलवादा ने व्यवस्था में सहयोग किया। गुजरात में ही इसी अवधि में भावनगर प्रांत के अन्तर्गत तलाजा तहसील के चूड़ी गांव में बालिकाओं का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इसमें चूड़ी, मोरचंद व भावनगर की लगभग 60 बालिकाएं सम्मिलित हुई। शिविर का संचालन श्रीमती उर्मिला बा पछेगाम ने किया। उन्होंने बालिकाओं को संघ से मिले संस्कारों को आगे अपने परिवार व गांव में प्रसारित करने की बात कही। वनराजसिंह चूड़ी ने आयोजन व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

इसी प्रकार 16 से 19 सितम्बर तक गोयणेश्वर महादेवर मंदिर डंडाली में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें बायतु, बालोतरा, सिणधरी आदि क्षेत्रों से 140 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। विदाई संदेश में शिविर संचालक भैरूसिंह पादरू ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने समाज की वेदना को अपना बनाकर उसकी भक्ति को ही ईश्वर प्राप्ति का उपयुक्त मार्ग बताया है। हमे उनके संदेश को हर गांव, हर घर तक पहुंचाना है। शिविर व्यवस्था का जिम्मा गांव के समाजबंधुओं ने मिलकर संभाला। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ एक का शेष)

राजनीतिक...

आपने अपने जीवन में 44 शिविर किए। कालांतर में राजनीति में अति सक्रियता के कारण संघ में निरन्तर नहीं रह पाए एवं 7 जनवरी 1967 को केंसर जैसी असाध्य बीमारी के कारण मात्र 46 वर्ष 2 माह की उम्र में आपका देहावसान हो गया। श्रद्धेय माट्साब कुशल संगठक, विद्वान लेखक, उत्कृष्ट सामाजिक कार्यकर्ता के साथ-साथ कुशल राजनीतिज्ञ थे। राजस्थान की राजपूत राजनीति को उन्होंने दिशा दी। महाराजा हणवंतसिंह जोधपुर के मुख्य सलाहकार के रूप में उन्होंने 1952 के प्रथम विधानसभा चुनावों में अपनी कुशल रणनीति के रूप में अपेक्षित परिणाम दिया। तदुपरांत अनेक राजघरानों को राजनीति में सक्रिय कर आम राजपूत एवं राजाओं के बीच की दूरी पाटने का प्रयास किया। स्वतंत्र पार्टी के मुख्य रणनीतिकार के रूप में आपने जयपुर की पूर्व महारानी गायत्री देवी का सक्रिय राजनीति में निर्देशन किया। इन सबके साथ-साथ श्रद्धेय माट्साब को आजाद भारत में राजपूतों के द्वारा अन्याय के प्रतिकार के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। देश की आजादी के तुरंत बाद 1949 में चौपासनी विद्यालय के सरकारी अधिग्रहण के खिलाफ हुए आंदोलन के आप मुख्य रणनीतिकार थे और सरकार से अपनी मांगे मनवाने में सफल रहे। इसके बाद तात्कालिक सरकार द्वारा राजपूतों के दमन के लिए लाए गए जागीरी उन्मूलन कानून के खिलाफ हुए दोनों भू-स्वामी आंदोलन के केन्द्र बिन्दु श्रद्धेय माट्साब ही रहे। 1 जून 1955 से 21 जुलाई 1955 तक हुए प्रथम भू-स्वामी आंदोलन एवं तत्पश्चात 19 दिसम्बर 1955 से प्रारम्भ हुए दूसरे आंदोलन की सम्पूर्ण योजना एवं रणनीति पूज्य तनसिंह जी की सहायता से श्रद्धेय माट्साब की ही थी। दूसरे आंदोलन में भारत की सरकार को एक राज्य की एक जाति के आंदोलन के सामने झुकना पड़ा एवं नेहरू अवार्ड के रूप में राजपूतों को उल्लेखनीय राहत दी गई। इन तीनों ही आंदोलनों की मुख्य बात यह थी कि ये सभी आंदोलन अहिंसक तरीके से लड़े गए। भूख हड़ताल, अनशन, अवज्ञा, गिरफ्तारी एवं जेल भरने के तरीके राजपूत जाति के तात्कालिक स्वभाव के अनुकूल नहीं थे लेकिन श्रद्धेय माट्साब के कुशल नेतृत्व में इतने लंबे आंदोलन सम्पूर्ण रूप से अहिंसक रहे। एक अनुमान के अनुसार 3 लाख से अधिक राजपूतों ने विभिन्न स्थानों पर गिरफ्तारियां दी एवं 25000 से अधिक लोगों ने जेल यात्रा की। उस समय की जेलों में स्थान नहीं बचे एवं गिरफ्तारी देने आए आंदोलनकारियों को जंगलों में ले जाकर छोड़ा गया। जमाने के अनुकूल हथियार अपना कर तात्कालिक सरकार को झुकाने की उनकी व उनके साथियों की यह योजना आज हमारे लिए प्रेरणादायी है। आज हम हर छोटे-मोटे विरोध प्रदर्शन में हिंसक होने को उतारू रहते हैं और हिंसा का सहारा लेकर अपने आंदोलन की उम्र को कम कर लेते हैं साथ ही आंदोलन के मुख्य ध्येय से भी भटक जाते हैं ऐसे में श्रद्धेय माट्साब की रणनीति एवं उनके नेतृत्व में हुए आंदोलन हमारे लिए मार्गदर्शक हैं। हम उनसे कितनी प्रेरणा लेकर अपना मार्ग शोधन कर पाएंगे यह हमारे पर निर्भर करता है।

संघ प्रमुख...

16 सितम्बर को बैंगलूर स्थित राजपूत सभा भवन में यहां निवास कर रहे प्रवासी समाज बंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें राजस्थान राजपूत समाज एवं कर्नाटक राजपूत समाज के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। स्नेहमिलन में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ क्षत्रियत्व एवं रजपूती की पाठशाला है जहां हमारे क्षत्रियोचित संस्कारों का अभ्यास करवाया जाता है। संघ का प्रांगण चरित्र निर्माण की कार्यशाला है जहां हमारे में आई विकृतियों से वैराग्य एवं क्षात्र संस्कारों का अभ्यास पूज्य तनसिंह जी प्रदत्त संस्कारमयी कर्मप्रणाली के माध्यम से होता है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि गीता हमारा शास्त्र है। उन्होंने गीता के विभिन्न अध्यायों का महत्त्व समझाते हुए कहा कि यह जीवन जीने की मार्गदर्शिका है इसलिए इसका निरन्तर अध्ययन किया जाना चाहिए। संघ गीता के बताए मार्ग का ही व्यवहारिक रूप है। इसलिए संघ को समझने की लिए गीता की समझ आवश्यक है। स्नेहमिलन में बालाजी सिंह ने 11 से 14 अक्टूबर तक होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की जानकारी दी एवं सभी को आमंत्रण दिया। दोनों संस्थाओं के पदाधिकारियों ने संघ प्रमुख श्री का आभार जताते हुए प्रवासी समाज बंधुओं में एवं कर्नाटक के स्थानीय क्षत्रिय बंधुओं में संघ की बात पहुंचाने का विश्वास दिलाया।

(पृष्ठ दो का शेष)

जीवनपयोगी...

(v) M.Sc. Nursing : यह दो वर्षीय स्नात्तकोत्तर पाठ्यक्रम है, जिसमें B.Sc. Nursing (Basic/Post Basic) डिग्रीधारी प्रवेश ले सकते हैं। B.Sc. में न्यूनतम 55 प्रतिशत प्राप्तांक अनिवार्य है। एक वर्ष का कार्यानुभव तथा स्टेट नर्स रजिस्ट्रेशन काउंसिल में रजिस्ट्रेशन भी आवश्यक है।

(vi) M.Phil Nursing : यह उच्चतर पाठ्यक्रम है, जिसमें प्रवेश हेतु M.Sc. Nursing में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करने आवश्यक हैं। इसकी अवधि 2 वर्ष है।

(vii) Phd in Nursing : यह शोध केन्द्रित डिग्री है, जिसकी अवधि 3-5 वर्ष है।

भारत में नर्सिंग शिक्षा की नियामक संस्था इण्डियन नर्सिंग काउंसिल (INC) है। किसी भी नर्सिंग संस्थान में प्रवेश से पूर्व अभ्यर्थी को यह सुनिश्चत कर लेना चाहिए कि वह संस्थान INC से मान्यता प्राप्त हो।

श्राद्ध...

श्राद्धों के कई प्रकार के भेद बताए गए हैं जिनमें कुछ इस प्रकार हैं : (1) एको दिष्ट श्राद्ध : जो किसी एक ही पितृ के लिए किया जाता है। (2) पावर्ण श्राद्ध : जो पिता, पितामह के साथ ही माता, नाना, नानी, दादी आदि के लिए किया जाता है। (3) काम्य श्राद्ध में किसी कामना की पूर्ति के लिए श्राद्ध किया जाता है। (4) नान्दी मुख श्राद्ध में विवाह या पुत्र आदि की प्राप्ति के लिए पितरों को खुश करने को श्राद्ध करते हैं। (5) शुद्धि श्राद्ध में शुद्धि के लिए ब्रह्म भोज कराया जाता है। (6) दैविक श्राद्ध में देवताओं को खुश किया जाता है। (7) महालय श्राद्ध अश्विन पक्ष की अमावस्या के दिन किया जाता है। जिन पितरों की मृत्यु की तिथि हमें ज्ञात नहीं है। जो भुला दिए गए हैं या वंशहीन हो गए हैं या उनका श्राद्ध करने की तिथि के दिन श्राद्ध करना भूल गए हैं - ऐसे सभी पितरों का श्राद्ध क्षमा के साथ इस दिन किया जाता है। **हालांकि श्राद्ध एक पौराणिक मान्यता मात्र है। हमारे सर्वोच्च शास्त्र गीता में अर्जुन द्वारा पिण्डदान आदि को लेकर उठाई गई शंकाओं को भगवान श्रीकृष्ण ने अज्ञान कहकर खंडन किया है।**

मनोहर सिंह जाड़ेजा का देहावसान

मनोहर सिंह

राजकोट राजपरिवार के सदस्य **मनोहर सिंह** प्रद्युमनसिंह जाड़ेजा का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे गुजरात सरकार में स्वास्थ्य एवं वित्तमंत्री रह चुके थे। राजकोट के लोगों में उनका विशेष सम्मान था।

श्री जगमालसिंह जी करणीसर का निधन

जगमाल सिंह जी करणीसर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री **जगमाल सिंह जी करणीसर** का निधन 24 सितम्बर 2018 को हो गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के सम्पर्क में आप 1955-56 में आ गए थे। बीकानेर में सक्रिय रहे। मई 1958 में आपने सुंधामाता (जालोर) में संघ का पहला शिविर किया। तभी से सक्रियता बढ़ गई और अक्टूबर 1958 में आप पूर्ण रूप से संघ निष्ठ बन गए। आपने दो उच्च प्रशिक्षण शिविर, चार माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर और 5 प्राथमिक शिविर किए थे। उसके बाद चाय बागान में मैनेजर बन जाने के कारण सक्रियता बनी नहीं सह सकी पर पूज्य तनसिंह जी से सम्पर्क में रहते थे। पूज्य तनसिंह जी को आपने चाय बागान में भी बुलाया था, जहां वे गए भी। सरलता, व्यवहारिकता और स्पष्टता आपकी जीवन शैली के स्तंभ थे जिसके कारण पूज्य तनसिंह जी से निकटता बनी रही।

शत प्रतिशत अंक लाने पर सम्मानित

जालोर जिले के आड़वाड़ा निवासी जयपालसिंह चौहान की

पुत्री आयुषी कंवर को मा.शि. बोर्ड राजस्थान की 12वीं कक्षा की परीक्षा में इस वर्ष हिन्दी ऐच्छिक विषय में शत प्रतिशत अंक लाने पर हिन्दी दिवस के अवसर पर भाषा व पुस्तकालय विभाग द्वारा सम्मानित किया गया। जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी द्वारा सम्मानित इस छात्रा ने मरुधर बालिका सीनियर सैकण्डरी स्कूल विद्यावाड़ी (रानी) से 12वीं कक्षा की परीक्षा दी थी।

भवानीसिंह

भैसावता निवासी ओमप्रकाश सिंह के पुत्र भवानीसिंह ने इस वर्ष राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित दसवीं कक्षा परीक्षा में 91.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

विक्रमादित्य सिंह बने कार्यपालक निदेशक

नागौर जिले के सीलगांव निवासी विक्रमादित्य सिंह खींची को केन्द्र सरकार की नियुक्ति समिति ने बैंक ऑफ बड़ौदा का कार्यपालक निदेशक (ई.डी.) नियुक्त किया है। श्री खींची इससे पहले देना बैंक में जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत थे।

(पृष्ठ छः से लगातार) मध्यप्रदेश में भी 16 से 19 सितम्बर की अवधि में ही एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर मोडी माताजी मंदिर, जावेद, नीमच में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन जितेन्द्रसिंह देवली ने गंगासिंह साजियाली के सहयोग से किया। शिविर का संचालक ने क्षेत्र में संघ कार्य को बढ़ाने हेतु सभी के सहयोग व सक्रियता की आवश्यकता जताई। शिविर शिविरार्थियों ने संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर की व्यवस्था स्थानीय समाजबंधुओं द्वारा की गई। इसी अवधि में भीलवाड़ा, हाड़ौती प्रांत का शिविर राजपूत धर्मशाला, जगदीश भगवान, ऊमरी में बृजराजसिंह खारड़ा के संचालन में सम्पन्न हुआ, जिन्होंने शिविरार्थियों को बताया कि संघ 72 वर्षों से निरन्तर समाज में संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है और शताब्दियों तक इस कार्य में निरन्तर चलते रहने की आवश्यकता है। जगदीश भगवान राजपूत सभा के कार्यकर्ताओं ने शिविर की व्यवस्था संभाली। शिविर में महाराणा कुम्भा छात्रावास, ऊमरी, निमझर, कान्जी का खेड़ा, मानसिंह जी का खेडा, चवला रेल का खेडा, सबलपुरा से लगभग 65 युवा व बालक सम्मिलित हुए। विदाई कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्र से समाजबंधु सम्मिलित हुए। 20 से 23 सितम्बर की अवधि में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के संचालन में दौसा जिले के नंदेरा गांव में प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें नंदेरा, दौसा, मेड़ी, चोरवाड़ा, उदयपुरा, झापड़ावास, लिखली आदि गांवों के शिवरार्थी शामिल हुए। शिविर संचालक ने कहा कि राम बनने के लिए कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है और संघ हमें राम बनाने का ही अभ्यास करवा रहा है।

युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं का नौंवा पड़ाव

श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के बैनर तले विगत जनवरी माह से चल रही युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं का नौंवा पड़ाव 16 सितम्बर को पोकरण में रहा। जैसलमेर जिले के पोकरण में स्थित श्री दयाल राजपूत छात्रावास में आयोजित इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब ने कहा कि माहौल की नकारात्मक बातें हमें आगे बढ़ने से रोकती है। आधारहीन धारणाएं हमारे में हीन भावना लाती है और परिणामतः हम छोटे लक्ष्यों में उलझ जाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम हमारे आसपास मौजूद सकारात्मकताओं को ढूंढे और उनसे प्रेरणा लेवें। उन्होंने दसवीं के बाद विषय चयन से लेकर सिविल सेवा की तैयारी तक के विभिन्न आयामों को स्पष्ट किया। राजस्थान लोक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह ने कहा कि परिस्थितियां धेनु हैं उन्हें निष्ठुर अंगुलियों से दोहना है। स्वयं का अंतरावलोकन करें एवं प्रतिदिन लिखें कि आज मैने मेरे द्वारा तय किए गए लक्ष्य के लिए क्या किया। उन्होंने स्वयं का उदाहरण बताया कि मैने तैयारी के दौरान अपने आपको जांचने के लिए डायरी लिखना प्रारम्भ किया एवं प्रति 10 दिन बाद

अपनी डायरी माननीय संघ प्रमुख श्री को दिखाकर उनसे मार्गदर्शन लेता था। ऐसा सभी कर सकते हैं। हम किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, जो चाहें हासिल कर सकते हैं लेकिन पुरुषार्थ की आवश्यकता है। राजस्थान लेखा सेवा में नव चयनित अधिकारी देरावरसिंह सांकड़ा ने कहा कि मैने संघ के शिविर में सुना कि हम श्रेष्ठ हैं तो मन में संकल्प जगा कि मेरी श्रेष्ठता प्रकट होनी चाहिए। तय किया कि कुछ श्रेष्ठ करना है और उसके लिए हर छोटे पड़ाव को नकारते हुए अपने संकल्प को सिद्ध करने की जिम्मेदारी स्वयं ने उठाई। ऐसे में कोई विकल्प नहीं बचा और परिणाम स्वरूप उस संकल्प ने सदैव मेहनत करने की प्रेरणा दी। पोकरण में आयोजित होने वाले सांघिक कार्यक्रमों से जुड़ा रहा और सदैव अपने संकल्प पर खरा उतरने की प्रेरणा मिलती रही। राजस्थान पुलिस सेवा (आरपीएस) के नव चयनित अधिकारी सज्जनसिंह सांकड़ा ने कहा कि मैं एक सामान्य शैक्षणिक स्तर का विद्यार्थी था, अध्यापक की नौकरी भी लग गई लेकिन लगा कि कुछ विशेष करना चाहिए, स्वतः प्रेरणा जागृत हुई और उस प्रेरणा ने आगे बढ़ने को मजबूर किया, पढ़ने को मजबूर किया। ऐसा सभी के साथ हो सकता है और आप में भी ऐसी प्रेरणा जागे इसके लिए ऐसे आयोजन रखे जाते हैं। यदि हम तैयारी करने के लिए 100 प्रतिशत समय देते हैं तो परिणाम 200 प्रतिशत मिलता है ऐसा मेरा मानना है। शेरगढ़ विकास अधिकारी भुवनेश्वरसिंह माताजी का गुड़ा ने कहा कि जमाने से दया की अपेक्षा रखना लाचारगी है और लाचारगी को बेदर्द जमाना तवज्जो नहीं देता। उन्होंने कहा कि उनकी आंखों की रोशनी मात्र 2 प्रतिशत ही है लेकिन कुछ करने का संकल्प मन में जगता है तो कोई भी अवरोध आड़े नहीं आता। उद्बोधन के बाद आयोजित संवाद सत्र में संभागियों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए बताया गया कि विकल्प न रखें, विकल्प ऊर्जा को खपाते हैं। जो भी परीक्षा दें उसके विगत 10 वर्षों के पेपर लेवें एवं उनकी समीक्षा करें तद्नुसार तैयारी करें। आजकल तैयारी के लिए अच्छी सामग्री अंग्रेजी में मिलती है इसलिए अंग्रेजी माध्यम को अपनाएं एवं अंग्रेजी अच्छी करने के लिए अंग्रेजी का अखबार पढ़ें। इस प्रकार की अनेक बातें संवाद के दौरान बताई गईं। कार्यक्रम में कर्मचारी प्रकोष्ठ के संयोजक कृष्णसिंह राणीगांव गणपतसिंह अवाय, प्रांत प्रमुख अमरसिंह, नरपतसिंह राजगढ़, खंगारसिंह झलोड़ा आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया।

रैलियों में हुआ समाज का शक्ति प्रदर्शन

चुनाव आने पर सभी समाज, नेता अपनी शक्ति का अहसास करवाने रैलियों के माध्यम से शक्ति प्रदर्शन करते हैं। विगत दिनों 22 सितम्बर को शिव विधायक एवं पूर्व विदेश, वित्त एवं रक्षा मंत्री जसवंतसिंह के पुत्र मानवेन्द्रसिंह जसोल ने पचपदरा में रैली कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया जिसमें राजपूत समाज के साथ-साथ उनके अन्य समर्थक भी शामिल हुए। विगत लोकसभा चुनावों में जसवंतसिंह का टिकट काटे जाने पर समाज एवं उनके समर्थकों ने उनके निर्दलीय चुनाव लड़ने पर स्वतः स्फूर्त समर्थन दिया था। ऐसा ही स्वतः स्फूर्त समर्थन स्वाभिमान रैली के नाम से आयोजित इस शक्ति प्रदर्शन में दिखा एवं उनकी टिकट काटे जाने के प्रति स्पष्ट नाराजगी प्रकट हुई। इसी कड़ी में 23 सितम्बर को जौहर स्वाभिमान सम्मेलन के नाम से राजपूत करणी सेना ने अपना 12वां स्थापना दिवस मनाया। इसमें भी भारी संख्या में समाज बंधु पहुंचे। चुनावों के समय ऐसे प्रदर्शन राजनीतिक दलों को समाज की शक्ति का अहसास करवाते हैं एवं सकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं।

छात्रावास कक्ष का उद्घाटन एवं प्रतिभा सम्मान

श्री करणी छात्रावास सरदारशहर में छात्रावास कक्ष का उद्घाटन एवं प्रतिभावान समारोह 16 सितम्बर को संपन्न हुआ। राज्य के पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री राजेन्द्र राठौड़ के मुख्य आतिथ्य में संपन्न इस कार्यक्रम में मेघराजसिंह रॉयल ने 11 लाख, मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने 5 लाख, कुंदनसिंह हरपालसर ने 151000 रुपए, रूपसिंह सारसर ने एक लाख, डॉ. ऋतु आसलसर ने अपनी प्रथम वेतन सहित समाज बंधुओं ने 31 लाख रुपए की घोषणा की। भगवानसिंह आसलसर ने अपनी धर्मपत्नी सुशील कंवर की स्मृति में एक कमरा बनाने की घोषणा की। समारोह में शिक्षा एवं खेलकूद की प्रतिभाओं, राजकीय सेवा में नवचयनितों, जनप्रतिनिधियों एवं आर्थिक सहयोगियों को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने प्रतिभाओं से आगे बढ़ने का आह्वान किया वहीं विधायक मनोज न्यांगली ने आपसी भेदभाव भूलाकर परिस्थितियों से मिलकर संघर्ष करने का आह्वान किया। कार्यक्रम अध्यक्ष मेघराजसिंह रॉयल ने प्रशासनिक सेवाओं की निःशुल्क कोचिंग की आवश्यकता बताई। किशोरसिंह रोलासर ने प्रतिवेदन पेश किया वहीं भीखमसिंह राजासर बीकानेर ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम को भीखमसिंह, जितेन्द्रसिंह, कानसिंह बोघेरा, मुलायमसिंह राजवी, राजेन्द्रसिंह छाजूसर, विक्रमसिंह कोटवाद, प्रभुसिंह हरियासर ने भी संबोधित किया। समारोह का संचालन डॉ. सुमन सांडवा ने किया। अंत में छात्रावास समिति के अध्यक्ष विक्रमसिंह बिल्लू ने आभार व्यक्त जताया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org